

3.2.2 International Webinars Conducted by Institute

2. समकालीन साहित्यिक विमर्श चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

दिनांक: 24 व 25-06-2021

उक्त संगोष्ठी में मुख्य वक्ता जय वर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, नाटिंघम, यू.के., तेजेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, लन्दन, यू.के., प्रो. संजीव कुमार दुबे आदि ने अपना उद्बोधन दिया। इस बेबीनार में कुल 978 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

BROCHURE

DAY-1

समकालीन साहित्यिक विमर्श चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ
क्रेडेंट टीवी और राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
(अंतरराष्ट्रीय वेबिनार, 24-25 जून, 2021, गुरुवार, शुक्रवार)

जय वर्मा
वरिष्ठ साहित्यकार, अल्बान-कॉव टेंग अकादमी, नाटिंघम, यू.के.

तेजेन्द्र शर्मा
वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार, लंदन (यू.के.)

प्रो. रमेश कुमार दुबे
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, परीक्षा नियंत्रक, लैंग, स्कूल ऑफ सेन्सेज, केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधीनगर

प्रो. वीरेंद्र कुमार शर्मा
मुख्य कुलाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग विश्वविद्यालय, जयपुर (म.प्र.)

प्रो. जय कोशल
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग विश्वविद्यालय, टीशू, पटिचर, अरुण

डॉ. कविता गौतम
प्राचार्या, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर, राजस्थान (स्वायत्त भाषण)

डॉ. प्रणु शुकला
सहा. आयोजक, हिन्दी, राज. कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर, राजस्थान (आयोजन समिति)

डॉ. रमेश कुमार
सहा. आयोजक-रसायन शास्त्र, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चोमू, (स्वायत्त भाषण)

डॉ. वीरेंद्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ आलोचक, जयपुर

डॉ. आशीष शंकर सिंह
सहायक आयोजक, हिन्दी विभाग, राज. कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर

आयोजन समिति
डॉ. हेमलता आंकोदिया, डॉ. सुषमा जैन, डॉ. सुजन डाका, श्रीमती चंदना उपाध्याय (राज. महिला महाविद्यालय, चोमू, राज.) सुषी प्राप्ति भारती, राधेश्याम माटनीलिया, कुवेर वर्मा (क्रेडेंट टीवी)

संपर्क: डॉ प्रणु शुकला, 75977-84917

24th JUNE THURSDAY 11:30 AM

CONNECT LIVE
CREDENT TV, YouTube, Facebook

प्रथम दिवस

DAY-2

समकालीन साहित्यिक विमर्श चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ
क्रेडेंट टीवी और राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
(अंतरराष्ट्रीय वेबिनार, 24-25 जून, 2021, गुरुवार, शुक्रवार)

प्रो. जय कोशल
वरिष्ठ साहित्यकार, अल्बान-कॉव टेंग अकादमी, नाटिंघम, यू.के.

प्रो. दिनेश कुमार
विभागाध्यक्ष, जनसंघार विभाग, राज. कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर

प्रो. डॉ. राजेश्वर शर्मा
संयोजक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राज. कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर

डॉ. दुर्गा प्रियंका अग्रवाल
वरिष्ठ आलोचक, जयपुर

डॉ. आशीष शंकर सिंह
सहायक आयोजक, हिन्दी विभाग, राज. कन्या महाविद्यालय, चोमू, जयपुर

आयोजन समिति
डॉ. हेमलता आंकोदिया, डॉ. सुषमा जैन, डॉ. सुजन डाका, श्रीमती चंदना उपाध्याय (राज. महिला महाविद्यालय, चोमू, राज.) सुषी प्राप्ति भारती, राधेश्याम माटनीलिया, कुवेर वर्मा (क्रेडेंट टीवी)

संपर्क: डॉ प्रणु शुकला, 75977-84917

25th JUNE THURSDAY 11:30 AM

CONNECT LIVE
CREDENT TV, YouTube, Facebook

द्वितीय दिवस

Registration Link of Conference

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSevly7rRq2Ft_UY9_ob7rnAE9wjaR5Bv7voHwcHOCFZ2D_FEBw/viewform?usp=sf_link

You Tube Link of Conference

https://youtu.be/-rJildy_rD8

जाने-माने साहित्यकार जुड़े: चौमूं में हिंदी साहित्य पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

महानगर संवाददाता

चौमूं। राजकीय कन्या महाविद्यालय चौमूं, जयपुर और क्रेडेंट टीवी के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आरंभ हुआ। संगोष्ठी की विधिवत शुरुआत करते हुए संयोजिका डॉ. प्रणु शुक्ला ने मां सरस्वती की वंदना की। कॉलेज प्राचार्य डॉ. कविता गौतम ने वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारे कॉलेज के लिए गौरवपूर्ण बात है कि हमसे देश-विदेश के जाने-माने साहित्यकार और वक्ता जुड़े हैं। मुख्य वक्ता केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात के हिंदी आलोचक, हिंदी अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष एवं डीन प्रोफेसर संजीव दुबे ने कहा कि हिंदी साहित्य के इन विमर्शों से लोकतंत्र मजबूत होता है और यह सारे विमर्श हिंदी साहित्य को



एक नया मजबूत आधार प्रदान करते हैं और आधुनिकता और अस्मितामूलक साहित्य के लिए एक नया आधार तैयार करते हैं। दूसरे वक्ता लंदन से शामिल हुए प्रसिद्ध कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने प्रवासी साहित्य पर चर्चा करते हुए कहा कि विमर्श लेखकों पर थोपे हुए से लगते हैं। उनका मानना है कि संवेदना के रूप में लिखा हुआ

साहित्य स्वयं एक विमर्श के रूप में उपस्थित होता है। नाटिघम यूके से उपस्थित वैश्विक साहित्यकार जय वर्मा ने भारत की संस्कृति और परंपराओं को साहित्य से जोड़ते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य भारतीय मन की ही आवाज है। समकालीन साहित्य वह है जो हम जीते हैं, जो हमारे आसपास के परिवेश में मौजूद है। विक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य

कुलानुशासक व हिंदी विभाग के अध्यक्ष शैलेंद्र शर्मा ने हिंदी विमर्श के अधिकांश पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि जो विषय नजरों से ओझल हो जाए, यह विमर्श उन विषयों को, साहित्य की नजरों में और केंद्र में लाने का काम करता है।

युवा आलोचक असम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जय कौशल ने विशेष तौर पर दलित आदिवासी विमर्श का जिक्र करते हुए पूर्वोत्तर साहित्य को साहित्य को समकालीन विमर्श से जोड़ा। उनका मानना था कि भारत विविधताओं का देश है और प्रत्येक क्षेत्र कि अपनी साहित्यिक संवेदनाएं हैं, अतः सब पर बात की जानी चाहिए। सत्र के अंत में कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र कुमार ने वक्ताओं का आभार जताया।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन हिन्दी साहित्य के वक्ताओं ने साझा किये अपने विचार

■ सजीवनी टुडे

जयपुर। राजकीय कन्या महाविद्यालय चौमूं, जयपुर और क्रेडेंट टीवी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय का आरंभ हुआ। संगोष्ठी की विधिवत शुरुआत करते हुए संयोजिका डॉ. प्रणु शुक्ला ने मां सरस्वती की वंदना की। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. कविता गौतम ने सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारी कॉलेज के लिए गौरव पूर्ण बात है कि हमसे देश विदेश के जाने-माने साहित्यकार और वक्ता जुड़े हैं। मुख्य वक्ता के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात के जाने-माने हिंदी आलोचक, हिंदी अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष एवं डीन प्रोफेसर संजीव दुबे ने कहा - हिंदी साहित्य इन विमर्शों से लोकतंत्र मजबूत होता है और यह सारे विमर्श हिंदी साहित्य को एक नया मजबूत आधार प्रदान करते हैं उत्तर आधुनिकता और अस्मितामूलक साहित्य के लिए एक नया आधार तैयार करते हैं। दूसरे वक्ता के रूप में लंदन से शामिल हुए प्रसिद्ध कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने प्रवासी साहित्य पर चर्चा करते हुए कहा कि

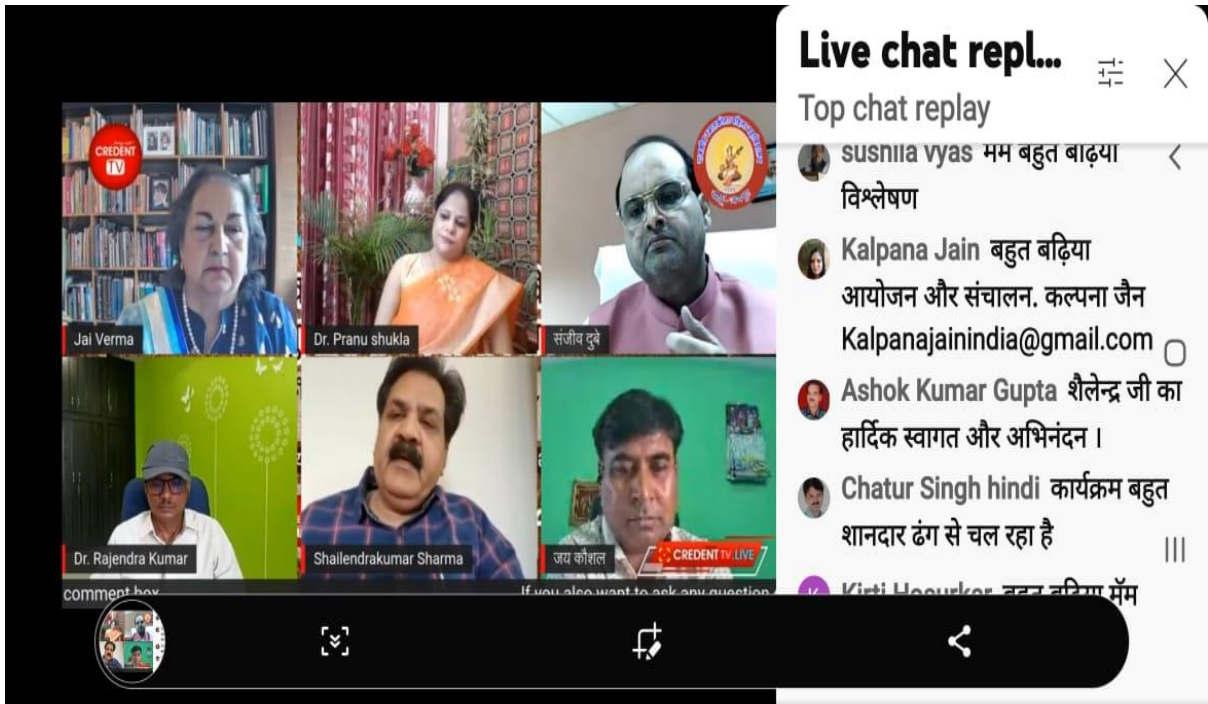


विमर्श लेखकों पर थोपे हुए से लगते हैं उनका मानना है कि संवेदना के रूप में लिखा हुआ साहित्य स्वयं एक विमर्श के रूप में उपस्थित होता है। नाटिघम यूके से उपस्थित जानी मानी वैश्विक साहित्यकार जय वर्मा ने भारत की संस्कृति और परंपराओं को साहित्य से जोड़ते हुए कहा - प्रवासी साहित्य भारतीय मन की ही आवाज है। समकालीन साहित्य वह है जो हम जीते हैं जो हमारे आसपास के परिवेश में मौजूद है। विक्रम

विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक व हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. शैलेंद्र शर्मा ने हिंदी विमर्श के अधिकांश पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा, जो विषय नजरों से ओझल हो जाए, यह विमर्श उन विषयों को, साहित्य की नजरों में और केंद्र में लाने का काम करता है।

युवा आलोचक असम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जय कौशल विशेष तौर पर दलित आदिवासी विमर्श का जिक्र करते हुए पूर्वोत्तर साहित्य को साहित्य को समकालीन विमर्श से जोड़ा। उनका मानना था कि भारत विविधताओं का देश है और प्रत्येक क्षेत्र कि अपनी साहित्यिक संवेदनाएं हैं अतः सब पर बात की जानी चाहिए। सत्र के अंत में कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र कुमार सभी वक्ताओं धन्यवाद करते हुए आभार ज्ञापित किया।

DAY-1 PHOTO



DAY-2 PHOTO

